

बाति कपूर सुधार, दीपक-ज्योति सुहावनी ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि. स्वाहा ।
 अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि. स्वाहा ।
 फल की जाति अपार, घ्रान-नयन-मन-मोहने ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि. स्वाहा ।
 आठों दरब सँवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसौं ।
 भव-आताप निवार, दस-लच्छन पूजौ सदा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा ।

अंग-अर्घ्य

(सोरठा)

पीड़ैं दुष्ट अनेक, बाँध मार बहुविधि करैं ।
 धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजै पीतमा ॥
 उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह-भव जस, पर भव सुखदाई ।
 गाली सुनि मन खेद न आनो, गुन को औगुन कहै अयानो ॥
 कहि है अयानो वस्तु छिनै, बाँध मार बहुविधि करै ।
 घर तैं निकारै तन विदारै, वैर जो न तहाँ धरै ॥
 ते करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा ।
 अति क्रोध-अगनि बुझाय प्राणी, साम्य-जल ले सीयरा ॥
 ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमाधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
 मान महाविषरूप, करहि नीच-गति जगत में ।
 कोमल सुधा अनूप, सुख पावै प्राणी सदा ॥
 उत्तम मार्दव गुन मन-माना, मान करन को कौन ठिकाना ।
 बस्यो निगोद माहिं तैं आया, दमरी रूँकन भाग बिकाया ॥

रूकन बिकाया भाग वशतैं, देव इक-इन्द्री भया ।
उत्तम मुआ चाण्डाल हूवा, भूप कीड़ों में गया ॥
जीतव्य जोवन धन गुमान, कहा करै जल-बुदबुदा ।
करि विनय बहु-गुन बड़े जन की, ज्ञान का पावै उदा ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तममार्दवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कपट न कीजै कोय, चोरन के पुर ना बसै ।

सरल सुभावी होय, ताके घर बहु-सम्पदा ॥

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी ।
मन में होय सो वचन उचरिये, वचन होय सो तन सौं करिये ॥
करिये सरल तिहुँ जोग अपने देख निरमल आरसी ।
मुख करै जैसा लखै तैसा, कपट-प्रीति अँगार-सी ॥
नहिं लहै लछमी अधिक छल करि, करम-बन्ध विशेषता ।
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहिं देखता ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तम-आर्जवधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

धरि हिरदै सन्तोष, करहु तपस्या देह सों ।

शौच सदा निर्दोष, धरम बड़ो संसार में ॥

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पाप को बाप बखाना ।
आशा-पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी ॥
प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञान ध्यान प्रभावतैं ।
नित गंग जमुन समुद्र न्हाये, अशुचि-दोष सुभावतैं ॥
ऊपर अमल मल भूयो भीतर, कौन विधि घट शुचि कहै ।
बहु देह मैली सुगुन-थैली, शौच-गुन साधू लहै ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमशौचधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

कठिन वचन मति बोल, पर-निन्दा अरु झूठ तज ।

साँच जवाहर खोल, सतवादी जग में सुखी ॥

उत्तम सत्य-बरत पालीजै, पर-विश्वासघात नहिं कीजै ।
साँचे-झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो ॥
पेखो तिहायत पुरुष साँचे को दरब सब दीजिये ।
मुनिराज-श्रावक की प्रतिष्ठा, साँच गुण लख लीजिये ॥

ऊँचे सिंहासन बैठि वसु नृप, धरम का भूपति भया ।
वच झूठ सेती नरक पहुँचा, सुरग में नारद गया ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसत्यधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो ।

संजम-रतन सँभाल, विषय-चोर बहु फिरत हैं ॥

उत्तम संजम गहु मन मेरे, भव-भव के भाजैं अघ तेरे ।

सुरग-नरक-पशुगति में नाहीं, आलस-हरन करन सुख ठाँ हीं ॥

ठांही पृथ्वी जल आग मारुत, रूख त्रस करुना धरो ।

सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो ॥

जिस बिना नहिं जिनराज सीझे, तू रल्यो जग-कीच में ।

इक घरी मत विसरो करो नित, आयु जम-मुख बीच में ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमसंयमधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

तप चाहैं सुरराय, करम-शिखर को वज्र है ।

द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करै निज सकतिसम ॥

उत्तम तप सब माहिं बखाना, करम-शैल को वज्र-समाना ।

बस्यो अनादि निगोद मँझारा, भू विकलत्रय पशु तन धारा ॥

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता ।

श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषय-पयोगता ॥

अति महा दुरलभ त्याग विषय-कषाय जो तप आदरैं ।

नर-भव अनूपम कनक घर पर, मणिमयी कलसा धरैं ॥

ॐ ह्रीं श्री उत्तमतपोधर्माङ्गाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दान चार परकार, चार संघ को दीजिए ।

धन बिजुली उनहार, नर-भव लाहो लीजिए ॥

उत्तम त्याग कह्यो जग सारा, औषध शास्त्र अभय आहारा ।

निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान सँभारै ॥

दोनों सँभारै कूप-जल सम, दरब घर में परिनया ।

निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया ॥